Bhaktiyog - Ek Parichay

Course - BA / B.Sc. Yogic Studies
Paper - 1

Lesson Presented by-

Dr. Prabhakar Devraj

Co-ordinator, Yogic Studies
E-mail - drpdevraj@gmail.com

भक्तियोग

भक्तियोग वह मार्ग है जिस पर चलकर साधक भक्ति के द्वारा ईश्वर को प्राप्त करता है। योग के सभी मार्गों में यह सबसे छोटा और सरल मार्ग है । लेकिन सरलतम होने के बावजूद आधुनिक युग के व्यक्ति के लिए यह सुगम नहीं होता । बौद्धिकता तथा अहंकार इस मार्ग के कठिन बाधक तत्त्व हैं । हमारी पारिवारिक तथा सामाजिक व्यवस्था अत्यंत क्लिष्ट है, जो मनुष्य को सरल नहीं रहने देती। भक्ति योग के मार्ग पर चलने के लिए सरल हृदय होना एक आवश्यक तत्व है। सरल हृदय में ही प्रेम तथा समर्पण की भावना के लिए स्थान होता है।

संसार में जितने भी संप्रदाय हैं भक्तियोग सबका केंद्र बिंदु है। बाइबिल में कहा गया है - "तुम ईश्वर से सच्चे मन हृदय आत्मा और संपूर्ण शक्ति के साथ प्रेम करो" । इस्लाम धर्म का मुख्य मंत्र है "ला इलाहा इल्लल्लाह" अर्थात् ईश्वर के सिवा और कोई नहीं है। हिंदू धर्म में अनेक देवी-देवताओं की कल्पना की गई है, जिन पर लोग विश्वास करते हैं । इस विश्वास का आधार भक्तियोग है।

भक्तियोग भावनाओं को केंद्रित कर एक दिशा में लगाने का विज्ञान है । अपनी भावनाओं की तृप्ति के लिए हम विभिन्न भौतिक वस्तुओं अथवा शरीर के प्रति प्रेम दिखाते हैं । यदि इसे हम ईश्वर की ओर मोड़ दें तथा अपने सभी कामनाओं और भावनाओं को उसके प्रति समर्पित कर दें तो हमें ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है। यही भक्तियोग का मूल मंत्र है ।

भक्तियोग की परिभाषाएं

प्राचीन काल से हर सभ्यता तथा संस्कृति में भक्तियोग उपलब्ध है। यहां हम कुछ परिभाषाओं को उद्धृत करेंगे:-

1. जो उपासक संसार के विषयों में आसक्ति नहीं रखता और अपनी भक्ति में ओतप्रोत रहता है वह मुझे प्राप्त होता है । - श्री मद्भगवद्गीता
2. भक्तियोग उच्चतर प्रेम का विज्ञान है । वह हमें दर्शाता है कि हम प्रेम को कैसे वश में लाएं, किस प्रकार एक नए मार्ग में उसे मोड़ दें और उससे श्रेष्ठ और महत्तम फल अर्थात मुक्ति

प्राप्त करें । सभी मनुष्यों में सौंदर्य-पिपासा विद्यमान है । भक्तियोग केवल इतना कहता है कि इस सौंदर्य पिपासा की गति को भगवान की ओर फेर दो ।

- स्वामी विवेकानंद

3. भक्तियोग ब्रह्म से एक तत्व प्राप्त करने के लिए व्यवस्थित मार्ग है इस मार्ग में पूर्णता प्राप्त करने के लिए ईश्वर के प्रति प्रेम ही सारभूत वस्तु है।

- स्वामी विवेकानंद

भक्ति क्या है ?

भक्ति शब्द संस्कृत के 'भज्' धातु से बना है, जिसका अर्थ है 'सेवा करना' या 'भजना'। अपने इष्ट देव या ईश्वर की सेवा तथा उसके गुणों का भजन करना ही भक्ति है ।

नारद भक्ति सूत्र के अनुसार -

सा त्वसमिन परमप्रेमरूपा ।। (सूत्र - 2)

अर्थात् ईश्वर के प्रति परम प्रेम ही भक्ति है ।

यल्लब्ध्वा पुमान् सिद्धो भवति, अमृतो भवति , तृप्तो भवति ।। (सूत्र - 4)

जिस को पाकर मनुष्य सिद्ध हो जाता है, अमर हो जाता है, और तृप्त हो जाता है ।

सा तु कर्मज्ञानयोगेभ्योऽप्यधिकतरा ।। (सूत्र-25)

वह कर्मयोग, ज्ञानयोग और राजयोग से भी श्रेष्ठतर है ।

श्रीमद् भगवद्गीता के बारहवें अध्याय का नाम 'भक्तियोग' है । इसमें भक्त के गुणों की विस्तृत चर्चा की गयी है । भक्त के कुछ मुख्य गुण इस प्रकार दिए गए हैं - स्वार्थ, अहंकार, आसक्ति तथा द्वेष भाव से रहित, सुख तथा दुःख में सम भाव रखने वाला, इंद्रियों को वश में रखने वाला आदि । तात्पर्य यह है की भक्तियोग के साधक में ये सभी गुण विकसित रहते हैं। तभी वह ईश्वर में निष्ठा बनाए रखने में सफल होता है ।

भक्ति के प्रकार:-

भक्ति के मुख्य दो प्रकार हैं :-

(1)अपरा भक्ति

मनुष्य जन्म से ही व्यक्तियों तथा वस्तुओं से प्रेम करता है । मां का प्रेम, पति-पत्नी का प्रेम, मित्रों का प्रेम, गुरु के प्रति शिष्य का प्रेम आदि में जो भक्ति भाव होता है वह अपरा भक्ति के अंतर्गत आता है । ऐसा नहीं है कि यह निरर्थक होता है । विवेकी मनुष्य में यह विकसित होकर परा भक्ति का रूप ले लेता है ।

(2) परा भक्ति

जब प्रेम या भक्ति की दिशा मनुष्यों तथा सामाजिक बंधनों से हटकर से हटकर ईश्वर की ओर मुड़ जाती है तो उसका रूप निस्वार्थ और दिव्य हो जाता है । इसे परा भक्ति कहते हैं।

श्री गीता में कृष्ण ने परा भक्ति का स्पष्ट विवरण दिया है । कृष्ण कहते हैं -

ब्रह्मभूत: प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति ।
सम: सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम् ।। (18/54)

अर्थात् ब्रह्म में एकीभाव से स्थित प्रसन्न मन वाला योगी, जो किसी के लिए न शोक करता है और न आकांक्षा करता है, ऐसा सम भाव वाला योगी मेरी परा भक्ति को प्राप्त होता है ।

गौणी भक्ति - यह परा भक्ति की साधना का प्रारम्भिक चरण है। पूजन, भजन, कीर्तन, नाम जप आदि के रूप में की जाने वाली भक्ति गौणी भक्ति कहलाती है। इसे साधन भक्ति भी कहते हैं ।

नवधा भक्ति -

श्रीमद् भागवत के अनुसार गौणी भक्ति के नौ प्रकार हैं :

श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम् ।
अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम् ॥

श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद सेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य और आत्म-निवेदन - इन सभी नौ क्रियाओं द्वारा भक्त अपनी भक्ति ईश्वर को अर्पित करता है ।

स्वामी विवेकानंद ने पराभक्ति के 5 रूपों का वर्णन किया है:-

(क) शांत भक्ति - यह भक्त साधना-पथ पर धीरे-धीरे अग्रसर होना पसंद करते हैं ।भक्ति के अधीन होकर यह अपनी सुध बुध नहीं खो बैठते । सांसारिक क्रियाकलापों तथा अनुष्ठानों द्वारा वे अपनी भक्ति का परिचय देते हैं ।यह धीर, गंभीर, शांत और नम्र होते हैं।

(ख) दास्य भाव- दास्य भाव उच्चतर अवस्था है, जिसमें भक्त अपने को ईश्वर का दास समझता है । जिस प्रकार सेवक अपने स्वामी की सेवा करता है, उसी प्रकार वह ईश्वर की सेवा में स्वयं को समर्पित करता है ।

(ग) सखा भाव - मनुष्य ईश्वर को सखा भाव अर्थात दोस्त के समान बराबरी की भावना के साथ प्रेम करता है । एक मित्र के समान ईश्वर के आगे वह अपना हृदय खोल देता है। उसे ईश्वर से कोई भय नहीं रह जाता।

(घ) - वात्सल्य भाव - इसमें ईश्वर को शिशु मानकर प्रेम किया जाता है । इन भक्तों में मातृत्व प्रेम का प्रभाव रहता है। जो संप्रदाय भगवान के अवतार में विश्वास करते हैं उन्हीं में वात्सल्य भाव की उपासना स्वाभाविक रूप से पनपती है । हिंदू तथा ईसाई महिलाएँ ईश्वर को क्रमशः कृष्ण तथा बाल ईसा के रूप में मान कर भक्ति करती हैं ।

(च)- प्रणय भाव - इसमें ईश्वर को पति या पत्नी मानकर उसी भाव से प्रेम किया जाता है। इसे मधुर भाव भी कहते हैं । संसार में प्रेम की यह उच्चतम अभिव्यक्ति है। इसमें स्वाभाविक रूप से क्रोध करना, उलाहना देना आदि सभी शामिल हैं । इस प्रेम के मार्ग में

जितनी ही बाधाएं आती हैं, यह उतना ही प्रबल रूप धारण करता जाता है । आगे चलकर यह दिव्य प्रेम में विकसित हो जाता है।

भक्तियोग के मूल तत्व

भक्ति योग के मार्ग पर चलने के लिए बीज रूप में कुछ तत्वों की आवश्यकता होती है। यदि इनका बीज रूप हमारे अंदर है, तो हम इस मार्ग पर चल सकते हैं, अन्यथा नहीं। यदि किसी व्यक्ति को ऐसा अनुभव हो कि उसके अंदर ये तत्त्व मौजूद हैं तो वह अभ्यास द्वारा इनका विकास कर भक्तियोग का मार्गी बन सकता है ।

भक्ति योग के बीज तत्त्व ये हैं:-

1. प्रेम

भक्तियोग का सबसे महत्वपूर्ण तत्त्व प्रेम है । प्रेम का तत्त्व प्रत्येक जीव में विद्यमान रहता है । पशु भी अपने परिवार और बच्चों से प्रेम करते हैं । कुछ पशुओं का मनुष्य-प्रेम जगत विख्यात है । मनुष्य में प्रेम के अनेक रूप दिखाई पड़ते हैं । प्रेम के अनेक स्तर भी हैं । इसका निम्न रूप दैहिक प्रेम है, तो अपने उच्चतम रूप में यह ईश्वर हो जाता है । संत कबीर ने प्रेम के स्वरूप का बड़ा सटीक वर्णन किया है -

प्रेम न बारी उपजे, प्रेम न हाट बिकाए ।
राजा प्रजा जो ही रुचे, सिस देहि ले जाए ।।

अर्थात प्रेम न किसी खेत की उपज है, न बाजार में बिकने वाली वस्तु है जिसे हम ख़रीद सकें । प्रेम के लिए राजा या प्रजा का कोई भेदभाव नहीं है। इसकी कीमत केवल शीश अर्थात् 'अहम्' है । शीश देखकर कोई भी इसे ले जा सकता है । अहंकार और प्रेम एक साथ नहीं चल सकते ।

स्वामी विवेकानंद के शब्दों में -

“केवल पुस्तकों को पढ़ने से मनुष्य बांझ हो जाता है । प्रेम के बिना ज्ञान सुखी हड्डियों जैसा रहता है प्रेम की एक बूंद का भी अनुभव करने पर मनुष्य विद्वान बनता है । ईश्वर प्रेम है और प्रेम ईश्वर है।”

2. श्रद्धा -

श्रद्धा का अर्थ है आदर के साथ अटूट विश्वास, जो किसी भी परिस्थिति में डिगे नहीं । इसके बिना भक्ति की कल्पना नहीं की जा सकती । जो ईश्वर में श्रद्धा रखते हैं, वे ही मनुष्य भक्तियोग के योग्य होते हैं । आँधियाँ आयें या तूफ़ान या प्रलय, ईश्वर के प्रति विश्वास ही उनका एकमात्र सम्बल होता है । उसके सहारे वे जीवन की हर बाधा खुशी खुशी पार कर लेते हैं ।

स्वामी सत्यानंद के शब्दों में “आप का समर्पण किसके प्रति है यह महत्वपूर्ण नहीं है । असली चीज आपका श्रद्धा भाव है जो आप अपने हृदय में अनुभव करते हैं ।”

3. समर्पण-

समर्पण का अर्थ है अपना सब कुछ न्योछावर कर देना । भक्त ईश्वर से कुछ मांगता नहीं, केवल अर्पित करता है। वह हमेशा अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए तैयार रहता है । भक्ति में न प्रतिदान का तत्त्व रहता और न ही भय का । भक्त का भाव होता है कि यह शरीर, सभी वस्तुएं, सभी कुछ तो ईश्वर का ही दिया हुआ है । उसकी वस्तु उसी को समर्पित करें तो इसमें संकोच कैसा ? समर्पण का यह भाव ही भक्त को ईश्वर के निकट ले जाता है।

भक्तियोग के इन सभी तत्वों में प्रेम सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि यह अन्य दो तत्त्वों श्रद्धा तथा समर्पण का मुख्य आधार है । यदि प्रेम गहरा हो तो श्रद्धा तथा समर्पण के भाव स्वतः ही आ जाते हैं।

सम्भावित प्रश्न :-

1. भक्तियोग का परिचय दें ।इसके मुख्य प्रकारों का वर्णन करें ।
2. भक्तियोग में प्रेम के महत्व की विवेचना करें।
3. भक्तियोग के मुख्य तत्त्वों के महत्व को रेखांकित करें ।
4. टिप्पणी करें -
    I. नवधा भक्ति
    II. गौणी भक्ति
    III. परा भक्ति के रूप

प्रस्तवित पाठ :

1. भक्तियोग - स्वामी विवेकानंद, अद्वैत आश्रम
2. नारद भक्ति सूत्र - गीता प्रेस, गोरखपुर
3. श्रीमद् भगवद्गीता
4. तंत्र, क्रिया और योग विद्या - स्वामी सत्यानंद सरस्वती, बिहार योग विद्यालय, मुंगेर